3. सामग्री का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या -

* इसी आधार पर अनुसंधानकर्ता ज्ञान कोष में अपना नया योगदान करता है। अतः यह भाग विशेष महत्व का है।
* यह अनेक प्रकार से किया जा सकता है और एक या एक से अधिक अध्यायों में सकता है।
* इसके अन्तर्गत साक्षी, चित्र तथा अनुच्छेदों के माध्यम से प्राप्त सामग्री का विश्लेषण किया जाता है। और महत्वपूर्ण भागों की व्याख्या की जाती है।
* मूल रूप से प्राप्त सामग्री का व्यवस्थापन इस दृष्टि से किया जाता है कि उसके आधार पर परिकल्पनाओं का परीक्षण कर उनकी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का निर्णय किया जा सके।
* आकड़ो के विश्लेषण में अनुसंधानकर्ता प्रमुख तथ्यों का वर्णन करते हुए उनके संबंधों को स्पष्ट करता है। यहाँ पर वह समस्त सूचनाओं की पुनरावृत्ति नहीं करता है। अपितु उन तथ्यों का विश्लेषण ही प्रस्तुत करता है, तथा उनके कारणों एवं प्रभावों

की चर्चा करके परिकल्पनाओं की परिक्षा करता है।

* अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण अंग प्राप्त सामग्री का विवेचन कर उसका अर्थ निकालना है।
* विश्लेषण करने के पश्चात वह अपवादों का भी अध्ययन करता है तथा अनियंत्रित सामग्री और उसके सम्भावित प्रभाव का भी स्पष्टीकरण देता है।
* यदि प्राप्त निष्कर्ष, अन्य अनुसंधानों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के अनुरूप अथवा विपरीत हैं तो वह उनका स्पष्टीकरण एवं कारण भी प्रस्तुत करता है।

☐ Ethical issues in writing Research Report

विश्लेषण एवं व्याख्या करते समय अनुसंधानकर्ता को निम्नलिखित सावधानी रखनी पड़ती है—

(i) क्या प्राप्त आकड़ों में निरीक्षण अथवा गणना संबंधी त्रुटि तो नहीं हो गयी है?
(ii) कहीं मैंने व्यक्तियों के मत को तथ्य तो नहीं मान लिया है?
(iii) कहीं मैं अपना निष्कर्ष अप्रतिनिधिक आकड़ों से तो नहीं निकाल लिया है?
(iv) क्या मैंने किसी ऐसे तथ्यों को जान-बूझकर छोड़ तो नहीं दिया है जो मेरी परिकल्पना को पुष्टि नहीं करता है?
(v) क्या मैंने भ्रम के कारण ही एक को दूसरे का कारण मान लिया है?
(vi) क्या मैंने ऐसा तो नहीं मान लिया कि

Page:
Date: / /

यदि दो तथ्य किसी एक पक्ष में संबंधित हो तो सभी में होंगे?

(vii) मैं किसी तथ्य को सत्य केवल इसलिए तो नहीं मान लिया हूँ कि किसी बड़े आदमी ने उससे कहा है?

(viii) किसी सीमातक संयोग का प्रभाव हमारे अनुभव पड़ पड़ा है?